लाभ की मात्रा को निर्धारित करने वाले तत्व

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वस्तुओं का विनिमय करने वाले देशों को जो लाभ होता है उसकी मात्रा को निर्धारित करने वाले प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं।

(1) लागत के अनुपातों में अन्तर → विदेशी व्यापार से मिलने वाले लाभ की मात्रा दो देशों में लागत अनुपातों में अन्तर पर निर्भर

स्थिति में उत्पादन की लागतों में जितना अधिक अन्तर रहता है लाभ की मात्रा भी उतनी अधिक होती है।

(3) व्यापार की शर्तें — किसी व्यापार से किसी देश को कितना लाभ प्राप्त होगा इसका निर्धारण करने में व्यापार की शर्तों का बहुत महत्त्व होता है। आयात और निर्यात के बीच विनिमय दर को ही व्यापार की शर्तें कहा जाता है। व्यापार की शर्तें अनुकूल होने से यह ज्ञात होता है कि कोई देश निर्यात की एक इकाई के बदले कितनी वस्तुएं प्राप्त कर सकता है। व्यापार की शर्तें मुख्यतः दो बातों पर निर्भर करती हैं (a) व्यापार की जाने वाली वस्तु की प्रकृति (b) एक देश द्वारा दूसरे देश की वस्तुओं के लिए की जाने वाली मांग की लोच। प्रो० टॉसिग के अनुसार उस देश को सबसे अधिक लाभ होता है जिसकी वस्तुओं की मांग विदेशों में अधिक होती है किन्तु विदेशी वस्तुओं के लिए उस देश में मांग कम होती है।

(4) मौद्रिक आय स्तर — किसी भी देश को विदेशी व्यापार से मिलने वाले लाभ का अनुमान उसकी मौद्रिक आय के स्तर से लगाया जा सकता है। यदि किसी देश की वस्तुओं की मांग दूसरे देश में निरन्तर बनी रहती है, उस देश की मौद्रिक आय स्तर भी ऊँचा होता है क्योंकि उस देश में निर्यात की जाने वाली वस्तुओं का प्रवाह निर्बाध होता है। निर्यात करने वाले देश में अधिक विदेशी मांग के कारण मजदूरी बढ़ जाती है तथा जिस देश में विदेशी वस्तुओं की मांग अधिक होती है उसकी मुद्रा की आय का स्तर कम हो जाता है परन्तु विदेशी वस्तुओं के लिए उसे अधिक कीमत देनी पड़ती है इसलिए उसको हानि होती है। अतः मौद्रिक आय के स्तर से यह ज्ञात हो जाता है कौन सा देश अधिक लाभदायक सौदा कर रहा है।

(5) देश का आकार — प्रो० टॉसिग ने बताया कि किसी देश का आकार जितना ही छोटा होगा विदेशी व्यापार से उस छोटे देश को उतना ही अधिक लाभ होगा। इसके विपरीत हालत में बड़े [illegible] होगी। इस तर्क का आधार यह है कि छोटे देश के पास वस्तुओं के उत्पादन की क्षमता कम होने के कारण विदेशी वस्तुओं के लिए उसकी मांग विदेशी वस्तुओं के विश्व मूल्यों पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकती है जबकि उस देश की निर्यात वस्तुओं का मूल्य उस वस्तु सम्बन्धी विश्व मांग की स्थिति द्वारा निश्चित होंगे। इस प्रकार उसकी वस्तुओं के मूल्य तो ऊँचे हो जायेंगे परन्तु वह अन्य देशों की वस्तुओं के मूल्यों को ऊँचा नहीं कर पायेगा। अतः उसे विदेशी वस्तुएं सस्ती मिलेंगी, [illegible] छोटे राष्ट्र के आयात कम एवं निर्यात अधिक होने से यह राष्ट्र लाभ प्राप्त करेगा।

Scanned with CamScanner